International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

हिन्द प्रशान्त क्षेत्र के सन्दर्भ में भारतीय विदेश नीति

पूजा

रिसर्च स्कॉलर
राजनीतिक विज्ञान विभाग
म.द.वि., रोहतक

शोध आलेख सारः प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने विश्व राजनीति के बदलते केन्द्र हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के सन्दर्भ में भारत की विदेश नीति व अन्य महाशक्तियों की आपसी प्रतिस्पर्धा पर प्रकाश डाला है तथ इस क्षेत्र में भारत की भू–अवस्थिति का भारत किस प्रकार अपने हितों के अनुसार प्रयोग कर सकता है और चीन अमेरिका की प्रतिस्पर्धा में किस प्रकार सन्तुलन बनाना है यह सभी भारत के हितों के अनुसार प्रयोग कर सकता है और चीन अमेरिका की प्रतिस्पर्धा में किस प्रकार सन्तुलन बनाना है। यह सभी भारत के हितों के अनुसार प्रयोग किये जा सकें। इसका भारत की विदेश नति 'पूर्व की ओर देखो' नीति में केन्द्रीय स्थान है जिसके लिए आसियान देशों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाना मूल उद्देश्य है तथा अपने आर्थिक हितों को भी आगे बढाना है।

मूलशब्दः स्प्रिंग ऑफ पर्ल्स, हिन्द–प्रशान्त, आसियान, पूर्व की ओर देखो, दक्षिण–चीन सागर।

भारतीय विदेश नीति पर एशिया प्रशान्त क्षेत्र का प्रभावः

21वीं सदी विश्व स्तर पर अनेकों परिवर्तनों के साथ प्रकट हुई है। विश्व राजनीति में शक्ति सन्तुलन बदल रहे हैं। शीतयुद्ध नवीन रूप में उभरा है। भारत भी नयी विश्व व्यवस्था की ओर कदम रख चुका है। साम्यवादी, पूंजीवादी का अन्तर अब महत्वहीन सा प्रतीत होता है। अब विश्व समुदाय एक ओर हो रहा है, देशों के मध्य सीमाये समाप्त हो रही हैं। ऐसे में बदलते संदर्भों के साथ भारतीय विदेश नीति में भी व्यापक परिवर्ततन दृष्टिगोचर हुये हैं। जहां 1990 के दशक तक भारतीय विदेश नीति का रूख पश्चिमी विश्व की तरफ रहा था वहीं आज तेजी से बदल रहा है। आज भारत अपने पूर्व की ओर देख रहा है। आज भारत अपने पड़ोस में सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाने का प्रयास कर रहा है तथा हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में अपनी विशिष्ट भूमिका खोज रहा है। यहां हम भारत की विदेश

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

नीति को हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में अध्ययन व विश्लेषण करेगें। हिन्द प्रशान्त शब्दांश जो कि जैव सम्बन्धित, भूगोल सम्बन्धी, व रणनीतिक, भू–राजनीतिक अर्थों को समेटे हुये है। आज विश्व राजनीति में सर्वाधिक चर्चित शब्दांश है। हिन्द प्रशान्त की यदि भौगोलिक स्थिति की बात करें तो हम पाते हैं कि इसमें दक्षिण एशिया/दक्षिण पूर्व एशिया व हिन्दमहासागर देश आदि शामिल हैं। हिन्द प्रशान्त शब्दांश विश्व राजनीति में 21वीं शताब्दी में ही प्रयोग होना आरम्भ हुआ। इसका सामरिक व रणनीतिक सन्दर्भ में प्रयोग सर्वप्रथम 2007 में डॉ0 गुरमीत खुराना द्वारा लिखे गये लेख में मिलता है। इसके बाद लगातार इसका प्रयोग बदलता रहा है।

हिन्द प्रशान्त क्षेत्र का विश्व राजनीति में महत्व हम निम्न बिन्दुओं से समझ सकते हैं:–

- हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर भण्डार विद्यमान है।
- सामरिक दृष्टि से विश्व केन्द्र में स्थित होगा।
- वैश्विक व्यापार का 2/3 हिस्सा इसी क्षेत्र से होकर जाता है।
- भविष्य की महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बनना।
- सघन जनसंख्या के लिहाज से यह बड़ा बाजार उपलब्ध करवाता है।

उपरलिखित सभी बिन्दू हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। इनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जो भी देश इस क्षेत्र में प्रभाव जमाने में सफल रहता है, 21वीं सदी इसी देश के हित में होगी तथा वह भविष्य की महाशक्ति होगा तथा विश्व को अपने प्रभाव में ला सकेगा। इसी कारण अमेरिका, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, भारत सभी इस क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने हेतु प्रयासरत हैं। महाशक्तियां इस क्षेत्र में स्थित राष्ट्रों से आर्थिक सम्बन्धों के द्वारा सामरिक हितों की पूर्ति पर बल दे रही हैं तथा आर्थिक सहयोग विकसित रूप में देखने को मिला है। पिछले दशक में चीन को प्रतिसन्तुलित करने हेतु भारत व अमेरिका, जापान–अमेरिका, भारत–जापान के बीच व्यापक आर्थिक रणनीतिक, तकनीकी सहयोग उभर कर आया है। अमेरिकी इस क्षेत्र में स्थित देशों पर सुरक्षात्मक समझौते करने हेतु दबाव बना रहा है। ताकि चीन की बढ़ती महत्वकांक्षाओं का दमन किया जा सके। इस प्रकार हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में विश्व राजनीति का केन्द्रीय स्थल बन गया है।

हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में आर्थिक व सामरिक सहयोग के समझौते:–

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

- देशों के मध्य सैन्य युद्धाभ्यास, भारत–अमेरिका–जापान के मध्य मालाबार युद्धाभ्यास.
- अमेरिका–भारत–जापान त्रिकोण
- रिजनल कॉम्प्रेहैन्सिव इकॉनोमिक पार्टनरशिप
- अमेरिका की पाईवोट एशिया नीति
- रणनीतिक चतुर्भुज – अमेरिका–जापान–ऑस्ट्रेलिया–भारत

इण्डो पैसेफिक क्षेत्र का भारतीय विदेशी नीति में महत्वः

इण्डो पैसेफिक क्षेत्र का महत्व की विदेश नीति के संदर्भ में यदि हम अध्ययन करें तो स्पष्ट देखने को मिलता है कि भारत की भू–राजनीतिक स्थिति भारत को एक विशेष भूमिका निभाने को प्रोत्साहित करती है। एशिया प्रशान्त के देश जो हिन्द–प्रशान्त महासागरों में फैले हैं के साथ भारत के विदेशी सम्बन्धों का प्राचीन इतिहास रहा है। इस क्षेत्र में स्थित दक्षिण एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया देशों पर उनकी धर्म संस्कृति, समाज, राजनीति सभी पर भारतीयता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। बौद्ध धर्म को उद्भव भारत में हुआ और यह पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में फैल गया।

किन्तु ब्रिटिश काल तथा उसके बाद के दशकों में भारत घरेलू स्थिति में उलझा हुआ था। तब भारत की नीति पश्चिमी उन्मुख रही तथा 1990 के दशक तक भारत ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिसका लाभ चीन–अमेरिका–जापान जैसी महाशक्तियों ने उठाया। चीन के सन्दर्भ में यहां विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि चीन बड़ी तेली से आर्थिक व रणनीतिक रूप से आगे बढ रहा है। यह अपने आपको अमेरिका का प्रतिस्पर्धी दिखाने का प्रयास कर रहा है। चीन की भौगोलिक स्थिति भी हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में उसे लाभ दिलाती है। चीन अपनी जब उपनिवेशवादी प्रवृति के द्वारा प्रभुत्व बढा रहा है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के देशों को सस्ते ऋण, आर्थिक सहायता व तकनीकी सहायता देकर उन्हें अपने नियन्त्रण में कर रहा है तथा अपनी साम्रज्यवादी नीति स्प्रिंग ऑफ पर्ल्स नीति के तहत चीन इन देशों के द्वीपों को अपने नियन्त्रण में कर रहा है तथा भारत को पूरी तरह इस क्षेत्र में घेरने की नई रणनीति प्रतीत हो रही है। कहने को तो वह अपनी इस नीति के माध्यम से अपने आर्थिक सम्बन्धों को आगे बढा रहा है पर वास्तव में यहां सैन्य अड्डे स्थापित किये जा रहे हैं तथा भारत हेतु एक बड़ा खतरा पैदा करने की तैयारी में हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

दक्षिण–चीन सागर व भारतः

दक्षिण चीन सागर, चीन के दक्षिण में स्थित एक सीमांत सागर है। यह प्रशान्त महासागर का एक भाग है जो सिंगापुर से लेकर ताईवान की खाड़ी में लगभग 35,00,000 कि.मी. में फैला हुआ है। इस क्षेत्र में बहुत छोटे–छोटे द्वीप हैं। जिन्हें संयुक्त रूप से द्वीप समूह कहा जाता है। सागर और उसके द्वीपों पर इसके तट से लगते विभिन्न देशों की संप्रभुता की दावेदारी है। इन दावेदारियों को इन देशों के द्वारा इन द्वीपों के लिए प्रयुक्त होने वाले नामों में भी दिखाई देती है। लेकिन नाम का दावेदारी से कोई नाता नहीं है और अगर चीन इसे मानता है तो फिर हिन्दमहासागर जो भारत के नाम पर है तो वह भी भारत का महासागर हुआ जिसे चीन अपने लिये उपयुक्त मानता है और भारत के लिए इसे नकारता है।

चीन दक्षिण चीन सागर पर अपनी दावेदारी मान रहा है और वहां अपने प्रभुत्व को दिखाने का प्रयास कर रहा है। यह भारत के साथ–साथ उस क्षेत्र के अन्य पड़ोसी देशों के लिए चिन्ता का विषय है। यू0एन0सी0एल0एस0 (उंक्लोस) का सदस्य होने के अलावा भारत के दक्षिण चीन सागर में भूमिका निभाने के तीन बड़े कारण हैं बेशक भारत दक्षिण चीन सागर में किसी भी प्रकार की भौगोलिक दावेदारी नहीं रखता तो भी 55 प्रतिशत आर्थिक हित भारत का इस क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। भारत का एक बहुत बड़ा व्यापार इस क्षेत्र से होता है। इसलिए आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र भारत के लिए महत्व का है, दूसरे नम्बर पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी का झंडा मजबूती से बुलंद रखते हुये ऐसी आशा प्रत्यक्ष तौर पर करनी चाहिएं तीसरे नम्बर पर भारत आसियान के अपने सहयोगी देशों के प्रति उत्तरदायी है। ऐसे में इस मामले पर किसी भी प्रकार का मौन साधे रहना एक तो भारत की कमजोर स्थिति को प्रकट करेगा वहीं दूसरा भारत के हित में भी नहीं होगा। इसलिए भारत ने दिखाया है कि वह दक्षिण चीन सागर विवाद में आसियान देशों के पक्ष में खड़ा है यानि की भारत स्पष्ट रूप से उंक्लोस द्वारा परिभाषित अन्तर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धान्तों के आधार पर दक्षिण चीन सागर में से जल परिवहन तथा उसके आकाशीय क्षेत्रों में से हवाई जहाजों की आवाजाही की स्वतंत्रता एवं निर्बाध व्यापार का समर्थन करता है। दावेदार देशों के हित में खड़ा होना भारत का निरपेक्ष है। अमेरिका की एशिया में नये सिरे से सत्ता सन्तुलन स्थापित करने की नीति में भी भारत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है तथा अमेरिका के साथ अपने रिश्ते और भी प्रगाढ करने का समय आ गया है।

आर्थिक रूप में तेजी से आगे बढ रहे परमाणु सम्पन्न भारत की ओर अमेरिका भी बहुत उम्मीदों से देख रहा है क्योंकि विश्व के इस क्षेत्र में भारत चीनी दादागिरी का प्रतिद्वंदी बना हुआ है।

अमेरिका के साथ मिलकर भारत इस क्षेत्र के लोगों को उनकी क्षमताऐं विकसित करने में सहायता दे सकता है तथा दक्षिण पूर्व एशिया में अपने हितों को साध सकता है। अगर भारत इस स्थित में सामन्जस्य बैठाने में सफल रहता है तो निःसन्देह 21वीं शताब्दी एशिया की होगी और उसमें शीषर्क देशों में भारत का लाभ होगा। लेकिन इस अवसर में भारत को होशियारी से काम करना होगा। जहां एक ओर चीन को आर्थिक रूप से मात देनी होगी व दूसरी ओर रणनीतिक तौर पर भी कमजोर करना होगा। इसके अलावा अपनी पूर्व की ओर देखों की नीति को यर्थाथ रूप देने के लिए भी कार्य करना होगा।

निष्कर्षः अंत में कहा जा सकता है कि हिन्द प्रशान्त क्षेत्र विश्व महाशक्तियों का गढ बन गया है। यह नये शीतयुद्ध का केन्द्र बनकर उभर रहा है। चीन व अमेरिका प्रतिस्पर्धा का नया केन्द्र हैं। वहीं भारत का विश्वशक्ति बनने का सपना साकार करने में यह क्षेत्र मुख्य कड़ी है। इसलिये भारत को अंधाधुध आगे बढने की बजाय अपनी रणनीति स्वयं निर्धारण करने की क्षमतायें बनाये रखनी होगी। भारत को कूटनीतिक दृष्टि से बहुत होशियारी बरतनी होगी और वह भी चीन के साथ अपने मधुर सम्बन्ध रखते हुए ताकि पूर्व यूरोप के देशों को किसी प्रकार का आर्थिक और राजनीतिक नुकसान न पहुंचे। ऐसा करके ही भारत इस क्षेत्र में एक जोरदार शक्ति के रूप में उभरेगा तथा अपने आर्थिक हित पूरे कर पायेगा।

सन्दर्भ सूचीः

1. www.jansatta.com, 2015.
2. क्रानिकल मैगजीन, सितम्बर 2015.
3. बी.एल. फाड़िया , अन्तराष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, जयपुर
4. रहीस सिंह,वैश्विक सम्बन्ध, पीयरसन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5. www.wikipedia.com